RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 January 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd January 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष–सत्रहवां | अंक– नौंवां | जनवरी–2020

एक पूरा वर्ष आपके सामने है	5	भक्ति और प्यार	31
सच्चा हमदर्द	11	हरि की भक्ति	33
दुःख – परीक्षा का समय	23	धन्य अजायब	34

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली-110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार - **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक - **नन्दनी**
सहयोग - **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

E-mail : dhanajaibs@gmail.com 214 Website : www.ajaibbani.org

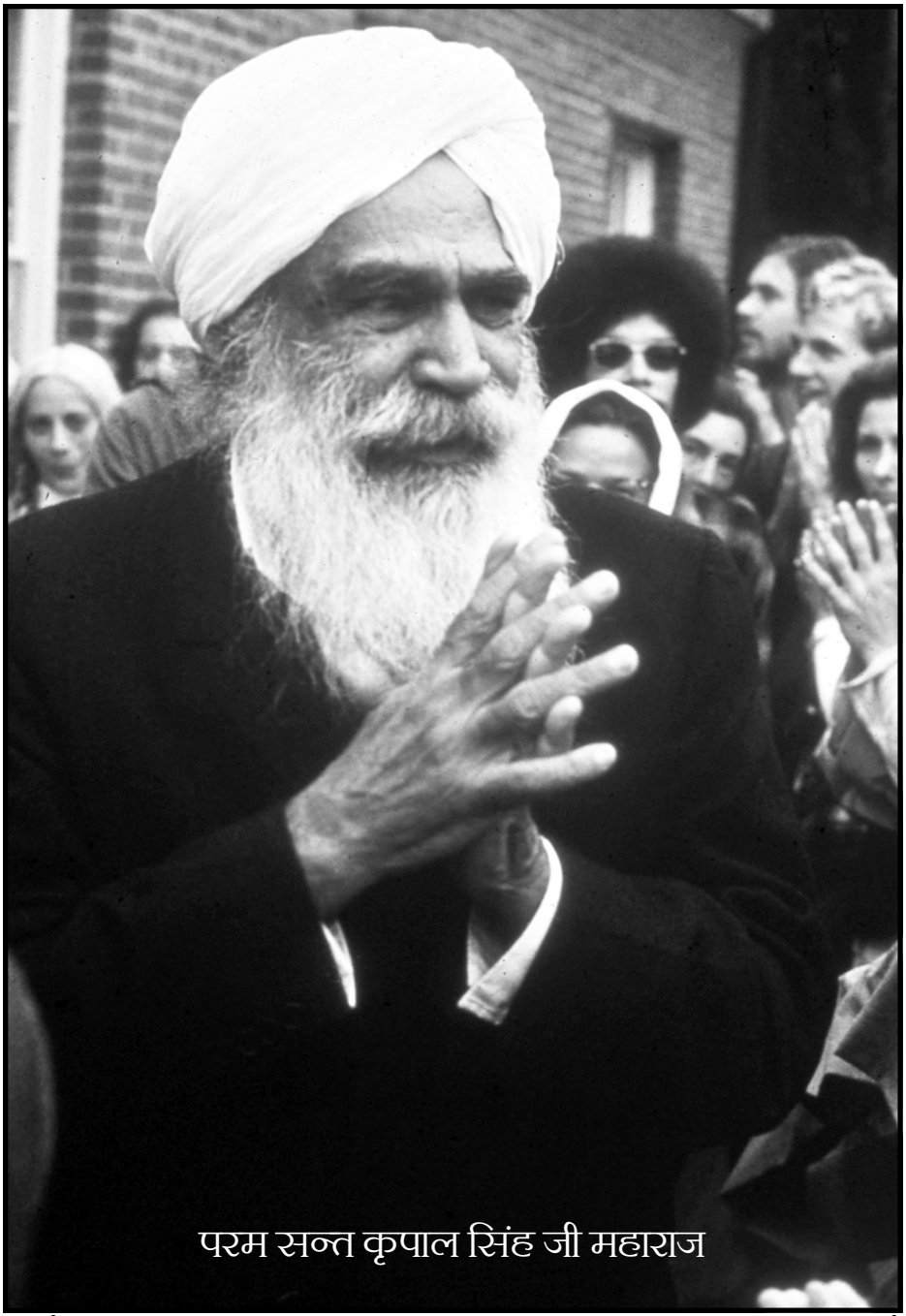

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

एक पूरा वर्ष आपके सामने है

नए वर्ष को नए जीवन से शुरू होने दें। अब आप समीक्षा करें कि आप पिछले वर्ष के मुकाबले कहाँ खड़े हैं, अब आप नया वर्ष शुरू कर रहे हैं आपको कैसा लग रहा है, क्या आप पहले से ज्यादा तरक्की कर रहे हैं?

एक प्रेमी: *महाराज जी! क्या आप हमें अपने बाल्यकाल के बारे में कुछ बताएँगे?*

महाराज जी: इस जानकारी से आपको क्या फायदा होगा? मान लें कि मैं एक नटखट लड़का था क्या आप उसकी नक़ल करेंगे? हर व्यक्ति ने अपना रास्ता खुद तय करना होता है। अपनी दौड़ खुद दौड़नी पड़ती है बेशक कुछ लोगों की पृष्ठभूमि होती है लेकिन उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जो अब शुरू कर रहे हैं वह भी आगे निकलकर पहला ईनाम जीत सकते हैं क्योंकि वे तेजी से जाकर वहाँ पहले पहुँच जाते हैं। यह आपकी श्रद्धा, नियमितता और आपके जुनून पर निर्भर करता है। क्यों न हम और लोगों के लिए उदाहरण बनें?

जिन्हें मनुष्य जामा मिला है उनके पास परमात्मा को जानने का विशेष अधिकार है जिसे कोई भी सरकार नहीं ले सकती। यह हमारी श्रद्धा और जुनून पर निर्भर करता है। हममें से ज्यादा लोग संसारी कामों में लगे हुए हैं, परमात्मा को पाना हमारा सबसे पहला बहुत निज़ी काम है जो हमने अपने-आप करना है। हर रोज शरीर को त्यागें, शारीरिक चेतना से ऊपर उठें और वहाँ से परमात्मा की ओर जाने वाले मार्ग की शुरूआत करें।

आज वर्ष के पहले दिन आप क्या हैं? इस बात का ध्यान रखें और वर्ष के अंत में तुलना करें कि आपने कहाँ तक तरक्की की है? आपको स्कूल में अगली क्लास में जाने के लिए पूरा वर्ष पढ़ना पड़ता है रोजाना स्कूल में नियमित रूप से पाँच-छह घंटे और घर में दो-तीन घंटे लगाने पड़ते है। आज आप जहाँ हैं आपको वहाँ से कम से कम एक क्लास आगे जाना चाहिए, उसके लिए आपके पास पूरा एक वर्ष है।

आप इस तरह काम करें कि आप अंतर में अपने गुरु के साथ उड़कर ऊँचें मंडलों में जा सकें। आप अपने आगे एक आदर्श रखें। कुरान शरीफ में लिखा है जो अपने जीवन को नहीं बदलना चाहते मैं उनके लिए कुछ नहीं कर सकता। अगर आपके आगे यह आदर्श है तो परमात्मा भी आपकी मदद करेगा। **परमात्मा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं**।

आपके पास पूरा एक वर्ष है। आप आज से ही नियमित तौर से भजन करें। जितना संभव हो ज्यादा से ज्यादा समय भजन में लगाएँ। बाक़ी जरुरतों का भी ध्यान रखें लेकिन जो आदर्श आपके आगे है उसे देखें और उस उपलब्धि को प्राप्त करें।

मैं आशा करता हूँ कि आप इस बात पर गौर करेंगे। क्या आपमें इस आदर्श को अपने आगे रखने की इच्छा शक्ति नहीं है? जैसा कि मैंने कहा है, ''**परमात्मा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं।**'' आज से ही ऐसा कार्यक्रम बनाएं कि आप इस स्वप्न को जीते जी देख सकें।

महमूद गजनवी के बारे में कहा जाता है कि उसने हिन्दुस्तान पर सत्तरह-अठारह बार हमले किए। वह यहाँ से बहुत से हीरे-

जवाहरात लूटकर ले गया, बहुत बच्चों को अनाथ किया, बहुत औरतों को विधवा किया। जब उसके जीवन का आखिरी समय आया तो उसने अपने मंत्रियों से कहा कि मैं हिन्दुस्तान से जो सोना, हीरे, जवाहरात लूटकर लाया हूँ उन्हें एक जगह पर सजा दिया जाए ताकि मैं देख सकूँ। उसके मंत्रियों ने वैसा ही किया।

महमूद गजनवी हीरे जवाहरातों के ढ़ेर को देखकर रोने लगा कि ये सब मेरे साथ नहीं जाएंगे। उसके एक मंत्री ने कहा , ''राजा! यह कोई नई बात नहीं सबने यहीं छोड़ जाना है।'' महमूद गजनवी ने कहा, ''अच्छा! जब मैं महल में वापिस जाऊँगा तब तुम मुझे यह बात याद दिलाना।'' उस मंत्री ने सोचा कि मुझे कोई बड़ा ईनाम दिया जाएगा। जब वापिस महल में आए तब मंत्री ने उसे याद दिलाया, ''आलमपनाह! आपने मुझे याद दिलाने के लिए कहा था।'' महमूद गजनवी ने हुक्म दिया कि इसे बाकी जिंदगी के लिए जेल में डाल दिया जाए। उस मंत्री ने पूछा, ''मैंने कौन सा गुनाह किया है?'' महमूद गजनवी ने कहा, ''जब मैं बच्चों को अनाथ कर रहा था औरतों को विधवा बना रहा था तब तुमने मुझे यह बात याद क्यों नहीं दिलवाई?'' महमूद गजनवी ने कहा कि मेरे साथ जो होगा वह तो मैं भुगतूंगा ही लेकिन मेरे पीछे यह नारा लगानाः

जुल्म साथ है खाली हाथ है।

मैंने बहुत गंभीरता से सोच-विचार करके कहा है कि यह वक्त रहते हुए की चेतावनी है। भजन ही एक ऐसी वस्तु है जो आपके साथ जाएगी, यह शरीर भी साथ नहीं जाएगा अगर आपने कोई इंतजाम किया है तो कृपया मुझे भी बता दें।

भजन ही आपका सच्चा और निजी कार्य है, यही एक काम है जो आप अपने साथ ले जा सकते हैं। जो व्यक्ति वर्ष भर नियमित

रहता है वर्ष पूरा होने पर जब इम्तिहान का वक्त आता है तो उसे कोई डर नहीं लगता। जो नियमित नहीं रहते आखिरी महीने में वे दिन-रात फिक्र में काम करेंगे जिससे कोई फायदा नहीं होगा। हम क्यों न अब से शुरू करें? आपके सामने पूरा वर्ष पड़ा है। एक वर्ष जिसमें बारह महीने हैं एक दिन भी कम नहीं। आज पहला दिन है, आज से भजन करना शुरू करें।

आप अपना लक्ष्य याद रखें, पुतले न बनें। आप दस फीट कूदना चाहते हैं तो अपने आगे दस फीट ऊँचा लक्ष्य रखें अगर आप दस फीट ऊँचा न भी कूद पाएं तो कम से कम चार या पाँच फीट तो कूद पाएंगे। हाफ़िज़ साहब कहते हैं, ''आपको मनुष्य का जामा मिला है कुछ तो करें अपने आगे सबसे ऊँचा लक्ष्य रखें।''

दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के एक महान सेवक नंदलाल ने कहा है, ''एक इंसान सच में इंसान कहलाने का हकदार तभी है जब वह परमात्मा को पकड़ लेता है।'' अगर आपके आगे यह आदर्श है तो आप स्वाभाविक ही बेहतर करेंगे।

मनुष्य जामे का सबसे ऊँचा लक्ष्य परमात्मा को जानना है। कुछ कम नहीं, कुछ ज्यादा नहीं। सभी चीज़ों के संबंध में आप कर्म व प्रतिकर्म के कर्मों का कर्ज़ चुका रहे हैं लेकिन यह लक्ष्य याद रखें। अफ़सोस! हमारे आगे कोई लक्ष्य नहीं। लक्ष्य सबसे ऊँचा होना चाहिए। हम इस वर्ष की शुरूआत ऊँचे लक्ष्य से करें, मेरे ख्याल से आप करेंगे? आखिरकार जिन लोगों ने परमात्मा को पाया है वे भी इंसान थे। क्या आप यह सोचते हैं कि वे स्वर्ग से गिरे थे? उनका जन्म भी आपकी और मेरी तरह ही हुआ था।

हम लोग सिर्फ प्रार्थना ही करते हैं। दो विद्यार्थी स्कूल जा रहे थे वे कुछ लेट चल रहे थे। एक विद्यार्थी ने प्रार्थना करना शुरू किया

और वह दौड़ने लगा। दूसरा विद्यार्थी रास्ते में बैठ गया और प्रार्थना करने लगा कि हे परमात्मा! मुझे वक्त पर स्कूल पहुँचा दे। सोचकर देखें! दोनों में से कौन स्कूल पहुँचेगा? पहले वाला विद्यार्थी प्रार्थना कर रहा था और दौड़ भी रहा है हो सकता है वह चार-पाँच मिनट लेट पहुँचे लेकिन जो रास्ते में बैठकर सिर्फ प्रार्थना कर रहा है उसकी प्रार्थना से काम नहीं बनेगा। जब परमात्मा आपको दौड़ते हुए देखता है तो वह भी आपकी मदद करता है।

मौलाना रूमी एक कबूतर की मिसाल देते हैं कि एक कबूतर मक्का की ओर उड़ा जा रहा था। आप देखते हैं कि कबूतर साठ या अस्सी मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ते हैं। कबूतर ने एक खरगोश को बहुत तेजी से दौड़ते हुए देखा। कबूतर ने खरगोश से पूछा, ''तुम कहाँ जा रहे हो?'' खरगोश ने कहा, ''मैं तीर्थस्थान मक्का पहुँचना चाहता हूँ।'' कबूतर को खरगोश पर दया आई तो कबूतर ने खरगोश को अपने पंजे में ले लिया। अगर आप रास्ते में बैठ जाएंगे तो कौन आपकी परवाह करेगा? डरें नहीं आपको मदद मिलेगी। गुरु भी देख रहा है कि आप अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं।

हमारे हुज़ूर कहा करते थे, ''मैं अलसुबह अमृतवेले हर व्यक्ति को दया देने जाता हूँ लेकिन सब सो रहे होते हैं फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो मेरी इंतजार कर रहे होते हैं वे दया को प्राप्त कर लेते हैं।'' सतगुरु अमृतवेले सदा रहने वाली कस्तूरी बाँटते हैं लेकिन जिनकी आँखें नींद से भरी हुई हैं वे इस कस्तूरी से वंचित रह जाते हैं। मैं इन बातों का हवाला केवल आपको प्रोत्साहन देने के लिए दे रहा हूँ। आप पुतले की तरह न बनें।

यह आपके लिए नये वर्ष का संदेश है। परमात्मा उनकी मदद करता है जो अपनी तरफ से पूरी कोशिश करके अपनी मदद खुद

करते हैं। देखते हैं कि आप इस वर्ष के अंत में परमात्मा की मौज़ में अपने आपको कहाँ पाते हैं? हम किसी भी समय इस संसार को छोड़ सकते हैं। हम जितनी जल्दी अपने लक्ष्य पर पहुँचे उतना ही बेहतर है, आप एक दफ़ा अपनी मंजिल तक पहुँच जाएं फिर चाहे आराम करें।

***

स्वामी जी महाराज की बानी

29 दिसम्बर 1987

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चा हमदर्द

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान) DVD - 536 (2)

हाँ भई! आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। इस छोटे से शब्द में स्वामी जी महाराज हमें इस दुनिया की असलियत का नक्शा बनाकर समझा रहे हैं। जिस परमात्मा ने इस दुनिया को पैदा किया है जिसके आधार पर यह दुनिया चल रही है आमतौर पर हम उस परमात्मा को भूल जाते हैं। हम यहाँ के सामान, दातों और जायदादों के साथ बंध जाते हैं। हर आदमी की अपनी-अपनी समस्याएं होती हैं, एक-एक समस्या में से और भी बहुत सी समस्याएं पैदा हो जाती हैं।

जहाँ आसा तहाँ वासा।

ऐसा कोई इंसान नहीं जिसकी सब आशाएं, तृष्णाएं पूरी हो गई हों और वह आखिरी वक्त परमात्मा का ध्यान करता हो। दस आशाएं पूरी हो गई तो दस आशाएं अधूरी रह गई। मौत के समय अधूरी आशाओं को याद करता है तो उन आशाओं का सकंल्प बन जाता है फिर उन्ही आशाओं को पूरा करने के लिए उसी जगह जन्म लेना पड़ता है।

आखिर जहाँ पैदा होता है वहाँ और समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। वहाँ दो आशाएं अधूरी रह गई तो उन्हें भोगने के लिए फिर संसार में आना पड़ता है। जब से यह दुनिया बनी है जन्म-मरण का सिलसिला कभी खत्म नहीं हुआ अगर खत्म हुआ होता तो आज हम इस दुखी दुनिया में हाजिर न होते।

प्यारेयो! अगर परमात्मा ने आपको पिछले अच्छे कर्मों का ईनाम जायदाद, अच्छी पत्नी, अच्छे बच्चे, अच्छा शरीर और दूसरी

सहूलियतें दी हैं तो आप उनसे प्यार से सेवा लें। ऐसा न हो कि आप उनसे सेवा लेने की बजाय उनके सेवादार बन जाएं। आपको जो जिम्मेवारियां मिली हैं उन्हें पूरा करें।

बड़ी समझने वाली बात है कि जब अंत समय आता है तब माता, पत्नी, बच्चे साथ नहीं जाते। सच्चाई तो यह है कि हम जीते जी ही एक-दूसरे का साथ छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। माता-पिता बूढ़े हो जाते हैं तब बच्चे कहते हैं कि इनके ख्याल बूढ़े हैं।

पश्चिम की तरह अब तो हिन्दुस्तान में भी वृद्धाश्रम बन गए हैं। जिन माता-पिता ने बच्चों के लिए सारी जिंदगी कुर्बान की होती है वही बच्चे माता-पिता से कहते हैं कि अब आप वृद्धाश्रम में जाएं। माता-पिता बच्चों का प्यार छोड़ नहीं सकते, वे बच्चों के प्यार के लिए रोते हैं लेकिन भजन के लिए, मालिक से मिलाप के लिए नहीं रोते। उनके दिल को चोट नहीं लगती कि आखिरी समय में भजन करके परमात्मा से मिलाप कर लें।

मेरे पास बच्चों के पत्र आते हैं और वे इंटरव्यू में भी बूढ़ा-बूढ़ी के बारे में पूछते हैं। जब बूढ़ा-बूढ़ी भी इंटरव्यू में मिलते हैं वे अपनी कहानी सुनाते हैं तब दिल पर बहुत असर होता है। मेरे पास एक ही जवाब होता है कि हम जिस वातावरण में रह रहे हैं हमारे इलाके में तो बूढ़े जानवर को भी घर से बाहर नहीं छोड़ते।

अगर कोई आदमी बूढ़े जानवर को बाहर छोड़ने के लिए जाता है तो लोग उससे पूछते हैं इस जानवर को कहाँ लेकर जा रहा है? जब वह कहता है कि मैं इसे गौशाला में छोड़ने के लिए जा रहा हूँ। तब उससे पूछा जाता है कि तुमने इस जानवर की कमाई कितने साल खाई है? वह कहता है कि मैंने दस साल इसकी कमाई खाई है। वे लोग उसे ताना मारकर कहते हैं कि

इतने साल इसकी कमाई खाकर अब तू इसे गौशाला में छोड़ने जा रहा है? इसी तरह कल तेरे बच्चे भी तुझे बाहर छोड़ आएंगे।

एक आदमी के माता-पिता जब बुजुर्ग हो गए तो उसने अपने माता-पिता को एक घंटी लाकर दे दी कि जब आपको भूख लगे या किसी चीज की जरूरत हो तो यह घंटी बजा देना। उस आदमी ने अपने बेटे को स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा। वह बच्चा जब पढ़ने लगा और उसने ऐसी कहानियाँ पढ़ी कि बच्चे के ऊपर माता-पिता का कितना अहसान होता है। माता-पिता ने बच्चे की उस समय मदद की होती है जब बच्चा असहाय होता है।

उस बच्चे ने सोचा! मेरा पिता अपने माता-पिता का कोई अहसान नहीं समझता। उस बच्चे ने बुजुर्गों से घंटी ले ली और कहा कि आपको दो-चार घंटे इंतजार करना पड़े या थोड़ी देर भूखा भी रहना पड़े तो आप यह सहन कर लेना। वे जब पूछेंगे तो मैं खुद ही जवाब दे दूंगा।

बच्चे के पिता ने देखा कि क्या बात है आज बूढ़ा-बूढ़ी ने घंटी नहीं बजाई? उस बच्चे ने कहा कि मैंने उनसे घंटी ले ली है वे अब घंटी कैसे बजाएंगे? पिता ने बच्चे से पूछा तूने उनसे घंटी क्यों ले ली? बच्चे ने कहा यह घंटी मैंने इसलिए ले ली है कहीं ये घंटी को घिसा न दें या तोड़ न दें। मैंने यह घंटी अपने पास रख ली है, मैं जब बड़ा हो जाऊंगा तो यह घंटी मैं आपको दूंगा और जब आप इस घंटी को बजाएंगे तो आपको खाना-दाना मिला करेगा।

पिता ने कहा क्या तू वाक्य ही हमारे साथ ऐसा करेगा? बेटे ने कहा जो करता है वह भरता है। जब आप अपने माँ-बाप के साथ ऐसा कर रहे हैं तो मेरा भी फर्ज बनता है कि मैं उसी तरह करूं।

हिन्दुओं में आमतौर पर अब भी यह रिवाज है कि जब माता-पिता जीवित रहते हैं तो उनकी तरफ कोई खास तवज्जो नहीं दी जाती लेकिन जब वे संसारिक यात्रा पूरी कर जाते हैं तो रिश्तेदारों को बुलाकर खूब हलवा-पूरी खिलाए जाते हैं। गुजरने के बाद हर साल उनका श्राद्ध किया जाता है। इसी रीति-रिवाज को देखकर कबीर साहब कहते हैंः

जीवित पितृ न माने कोऊ मुए श्राद्ध कराही।

वही सेवा अच्छी है जो जीवित माता-पिता की जाए।

ज्योंदयां दे पेट सड़े, मोयां पिच्छो कड़ाह चढ़े।

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में। पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में।
चेत कर प्रीत करो सतसंग में। गुरु फिर रंग दें नाम अरँग में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू ठंडे दिल से सोचकर देख, इन आँखों से जिस कुल-कुटुम्ब को देख रहा है इनमें से तेरा कोई मित्र नहीं, सब अपने-अपने मतलब का प्यार करते हैं। तू जाग इनकी असलियत को समझ। सतसंग में जा अगर तू सतसंग में प्यार और श्रद्धा से जाएगा तो गुरु तुझे निर्मल रंग में रंग देंगे।''

हम कामयाब क्यों नहीं होते? हमारा पत्थर और पानी वाला लेखा है। जिस तरह पत्थर अपने अंदर पानी को जज्ब नहीं होने देता। सन्त-महात्मा सतसंग में हमें समझाते हैं कि हमारे ऊपर विषय-विकारों और दुनिया के सामान का रंग चढ़ा हुआ है। हम इन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं फिर हमारे ऊपर निर्मल रंग कैसे चढ़े और हम किस तरह कामयाब हों। ऐसा नहीं हम प्रेमी नहीं हैं और हमारा सतसंग या गुरु के साथ प्यार नहीं।

हर आदमी प्यार और श्रद्धा से सतसंग में जाता है। गुरु से नाम लेता है, गुरु से प्यार करता है श्रद्धा भी दिखाता है लेकिन हमें जो बीमारियां लगी हुई हैं हम उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं अगर हम इन बीमारियों को छोड़ें तो कामयाब हो जाएंगे।

धन सम्पत तेरे काम न आवे। छोड़ चलो यह छिन में।।

अब आप प्यार से समझाते हैं, ''तू जिस धन पदार्थ का मान करता है कि मेरा इतना पैसा बैंक में जमा है, मेरी इतनी जायदाद बन गई है। यह तेरा फिजूल का ही मान है। पता नहीं किस वक्त साँस की गतिविधि रूक जाएगी। एक सैकिंड लगेगा इस जायदाद के कई वारिस बन जाएंगे।''

मैंने मौत के समय कई धनी लोगों की हालत देखी है उसकी जान पर बनी होती है वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है। घरवाले कहते हैं कि इसने अभी वसीयत नहीं की। फलाने बैंक में कितना धन है उसकी पासबुक हमें दे, वह हमारे नाम पर कर दे।

आप सोचकर देखें! वह उस समय कुछ भी नहीं कर सकता। ऐसे लोग भी देखे हैं जो बुजुर्ग को कचहरी में चारपाई पर उठाकर ले जाते हैं लेकिन वह उस समय कुछ भी नहीं बोल सकता। उस वक्त की हालत को देखकर कबीर साहब प्यार से कहते हैः

कौडी कौडी जोड़के जोड़या लख करोड़।
मरती वरया रे नरा लई लंगोटी तोड़।।

आगे रैन अंधेरी भारी। काज करो कुछ दिन में।।

आप कहते हैं, ''देख प्यारेया! आगे बहुत लंबा-चौड़ा, गहरा ऊँचा और टेड़ा-मेड़ा रास्ता है, उस रास्ते में बहुत अंधेरा है। हम अब भी जब आँखें बंद करते हैं तो अंधेरा है। न कुछ अंदर दिखता

है न बाहर ही दिखता है। तू नाम की कमाई कर उस जगह नाम अपना प्रकाश करेगा, गुरु तेरे साथ होगा वह तुझे अपने प्रकाश के साथ निकालकर ले जाएगा।

सन्त-महात्माओं ने बानी हमें डराने के लिए नहीं समझाने के लिए लिखी है। महात्मा की बानी न रोचक होती है न भयानक होती है, महात्माओं की बानी यथार्थ होती है।

यह देही फिर हाथ न आवे। फिरो चौरासी बन में।

स्वामी जी महाराज बड़े प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा ने बड़ी भारी दया करके हमें इंसान का जामा दिया है। यह जामा एक बार हाथ से निकल गया तो चौरासी लाख योनियों में पशु, पक्षी, पेड़, साँप के जामें मिल जाएंगे। कई ऐसे जामें हैं जिनमें बड़ी लम्बी-लम्बी उम्रें हैं। एक-एक खानि का हिसाब लगाएं तो बड़ा वक्त लगता है। हम इस देही में सिर्फ नाम जपकर ही फायदा उठा सकते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

दिवस गवाया खेल के रात गवाई सोय।
हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाय।।

गुरु सेवा कर गुरु रिझाओ। आओ तुम इस ढंग में।

आप कहते हैं, ''गुरु आपको जो बताता है आप वह करें। गुरु की खुशी प्राप्त करें अगर जिंदगी में कोई अच्छे से अच्छा करने वाला कार्यक्रम है तो वह गुरु की आज्ञा का पालन करना है। गुरु हमें जो रास्ता बताता है हमने ईमानदारी से सच्चे दिल से उस रास्ते पर चलना है।''

सन्त-सतगुरु हमेशा ही हमारे ऊपर उस काम को करने की जिम्मेवारी डालते हैं जो काम हम आसानी से कर सकते हैं लेकिन

हम भजन-सिमरन नहीं करते। गुरु हमें जो करने के लिए कहते हैं हम वह भी नहीं करते। हम अपना काम भी गुरु से करवाना चाहते हैं कि वह अपने आप ले जाएगा। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे यह तो इस तरह हैः

लद वी दे लदेंदा वी दे और लद्दन वाला वी घरो ही दे।

आप सोचकर देखें! स्कूल जाना बच्चे का फर्ज है। आगे टीचर का काम पढ़ाना है अगर बच्चा स्कूल न जाए रास्ते में बैठकर कहे कि मैं आपकी बहुत इज्जत करता हूँ आप मुझे पास कर दें। बच्चे को कोशिश करके स्कूल में जाना चाहिए।

इसी तरह हमने सिमरन करके नौं द्वारे खाली करके मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर सूरज, चंद्रमा, सितारों से ऊपर जाकर गुरु स्वरूप को प्रकट करना है। गुरु स्वरूप तक पहुँचना सेवक का धर्म है। वहाँ पहुँचकर कहने की भी जरूरत नहीं रहती। आगे गुरु का काम है कि वह कितने समय में हमसे एक मंडल से दूसरा मंडल पार करवाता है। गुरु स्वरूप तक पहुँचकर सेवक की ड्यूटी खत्म हो जाती है वहाँ पहुँचकर वह सच्चा शिष्य बन जाता है।

प्यारेयो! हम तब तक ही बातें करते हैं जब तक गुरु स्वरूप तक नहीं पहुँचते। गुरु स्वरूप तक पहुँचकर सब बातें खत्म हो जाती हैं। तब पता लगता है कि मेरा गुरु अंतर्यामी है। वहाँ पहुँचकर जुबान बंद हो जाती है। हम अंदर नहीं जाते कमाई नहीं करते एकाग्रता प्राप्त नहीं करते बस! हमारे पास बातें ही बातें हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

गल्ली किन्हें न पाया।

गुरु बिन तेरा और न कोई। धार बचन यह मन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप अपनी आँखों से दुनिया की हालत देखें! गुरु के बिना आपका कोई मित्र, कोई साथी या कोई दर्दी है? गुरु ही **सच्चा हमदर्द** है। आप इस वचन को मान लें कि दुखी समय में मदद करने वाला और बिना किसी लोभ-लालच के प्यार करने वाला एक गुरु ही है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सज्जन सेई आखिए जो चलदयां नाल चलन।
जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दसन।।

जगत जाल में फँसो न भाई। निस दिन रहो भजन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप लोक-लाज में न फँसें। यह लोक-लाज आपके साथ नहीं जाएगी। आप दिन-रात भजन-अभ्यास में लगे रहें। प्रेमियों से बात करने से पता चलता है वे

कहते हैं कि हम रिश्तेदारी में गए थे हमने सोचा अगर हम भजन-अभ्यास में बैठेंगे तो ये लोग क्या कहेंगे। हममें से बहुत लोग लोक-लाज में आकर नाम नहीं लेते कि लोग हमें क्या कहेंगे कि यह अभी से भक्ति करने लगा है, यह साधुओं के पीछे फिरता है?'' कबीर साहब कहते हैंः

डूबोगे रे बाप रे बहु लोगन की कान।
तब कुल किसका लाज सी जब चक धरयो मसान।।

साध गुरु का कहना मानो। रहो उदास जगत में।।

हमारा जानी दुश्मन हमारा मन है, इन्द्रियाँ इसकी फौजें हैं जिनके द्वारा यह हमें बस में रखता है। जो दुश्मन का कहना मानेगा वह कभी कामयाब नहीं होगा। जो दुश्मन के आगे अपने हथियार फेंक देगा वह उसका गुलाम बन जाएगा फिर उसकी जैसी मर्जी वह गुलाम को नचाए; उसे वह नाच करना पड़ेगा।

आप साध गुरु का कहना मानें। सतगुरु आपको भजन करने के लिए कहते हैं आप दिन में भी भजन करें,रात को भी भजन करें, साँस-साँस के साथ सिमरन करें। सिमरन करने में कौन सा मूल्य लगता है? हवाई जहाज में सफर करते हैं, लोगों से बातें करते हैं। बच्चे एक, दो, तीन, चार करते हैं क्या मूल्य लगता है? इसी तरह सिमरन करने में कौन सी रूकावट है कौन सा मूल्य देना पड़ता है? सतसंगी को सिमरन करने की आदत बना लेनी चाहिए।

छल बल छोड़ो और चतुराई। क्यों तुम पड़ो कुगति में।

आप कहते हैं कि छल करना, धोखा करना और ईर्ष्या करना छोड़ दें। आप मन की इस खोटी चाल को नहीं समझते। हम यहाँ तक मन का हुक्म मान लेते हैं कि जो शब्द गुरु हमारे अंदर बैठा

है हम उसके साथ भी धोखा करने की सोचते हैं हालाँकि वह धोखा नहीं खाता, वह हमारी हालत को अच्छी तरह जानता है।

यह एक धोखा ही है कि हम बैठे तो अभ्यास में होते हैं लेकिन उस समय भी हम दुनिया के बारे में सोच रहे होते हैं। गुरु हमारे अंदर इस तैयारी में होता है कि यह कब तीसरे तिल पर टिके तो मैं इसे अंदर थोड़ी बहुत झलक दिखाऊं लेकिन हम बाहर घूम रहे होते हैं। हम सिनेमा के बारे में या विषय-विकारों के बारे में सोच रहे होते हैं। गुरु के साथ इससे ज्यादा छल-कपट और क्या हो सकता है जब हम अभ्यास के वक्त भी ऐसे ख्याल उठा रहे होते हैं।

सुमिरन करो गुरु को सेवो। चल रहो आज गगन में।।
कल की खबर काल फिर लेगा। वहाँ तुम जलो अगिन में।।

सन्त-सतगुरु का मतलब यह नहीं कि आप नाम लेकर बीस साल या पचास साल बैठे रहें। सन्त हमें कोल्हु चक्कर में नहीं फँसाते। आप सोच-समझकर अभ्यास करें। सन्त-सतगुरु जो परहेज बताते हैं उस तरह करने से आप थोड़े ही दिनों में कामयाब हो सकते हैं । आज का काम कल पर न छोड़ें पता नहीं कल आए ही न! कबीर साहब कहते हैं:

कल करन्ता अब कर अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवई जब सिर पर आया काल।।

हम अपनी तो प्लेनिंग बनाते हैं कि हम कल यह करेंगे परसो वह करेंगे। हमारी डोरी जिस परमात्मा के हाथ में है कभी आपने उसकी प्लेनिंग की तरफ ध्यान दिया है कि वह क्या प्लेनिंग बना रहा है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मता करे पश्चिम की ताईं पूरब ही ले जात।

हम इस तरफ जाने की सोचते हैं वह उस तरफ ले जाता है। सोचना पड़ेगा कि हमारी डोरी किसी शक्ति के हाथ में है।

अबही समझ देर मत करियो। ना जानूँ क्या होय इस पन में।।
यों समझाय कहें राधास्वामी। मानो एक बचन में।।

गुरु नानकदेव जी का एक खास शिष्य मर्दाना बहुत समय आपके साथ रहा। एक दिन गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना से पूछा, ''मर्दानया! जिंदगी का कितना भरोसा समझता है?'' मर्दाना ने कहा, ''एक कदम आगे बढ़ाया है दूसरे कदम का पता नहीं।'' मर्दाना ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''आप जिंदगी का कितना भरोसा समझते हैं?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''साँस ऊपर गया है पता नहीं वापिस आएगा या नहीं।''

प्रेमी श्रद्धालु के लिए एक ही वचन काफी होता है। पता नहीं दूसरे सैकिंड में क्या हो जाएगा? जो नाम जप लिया वही अपना है।

सुंदरदास एक दिलचस्प कहानी सुनाया करता था कि एक पंडित अच्छा पढ़ा-लिखा था। उसके घर में लड़का हुआ पंडित ने सोचा कि यह पढ़ जाए, बड़ा होने पर मैं इसकी शादी करूंगा। इस लड़के का यह काम करूंगा वह काम करूंगा लेकिन मौत किसी का लिहाज नहीं करती।

जब मौत आई यमों ने पंडित से पूछा, ''बता तेरे पास कोई भजन-अभ्यास है, अच्छा कर्म है?'' पंडित ने कहा, '' मुझे तो समय ही नहीं मिला। अभी तो मैंने अपने लड़के मुकंदे की शादी करनी थी लेकिन आपने तो मुझे पहले ही बुला लिया।'' लेकिन उस समय कौन सुनता है?

***

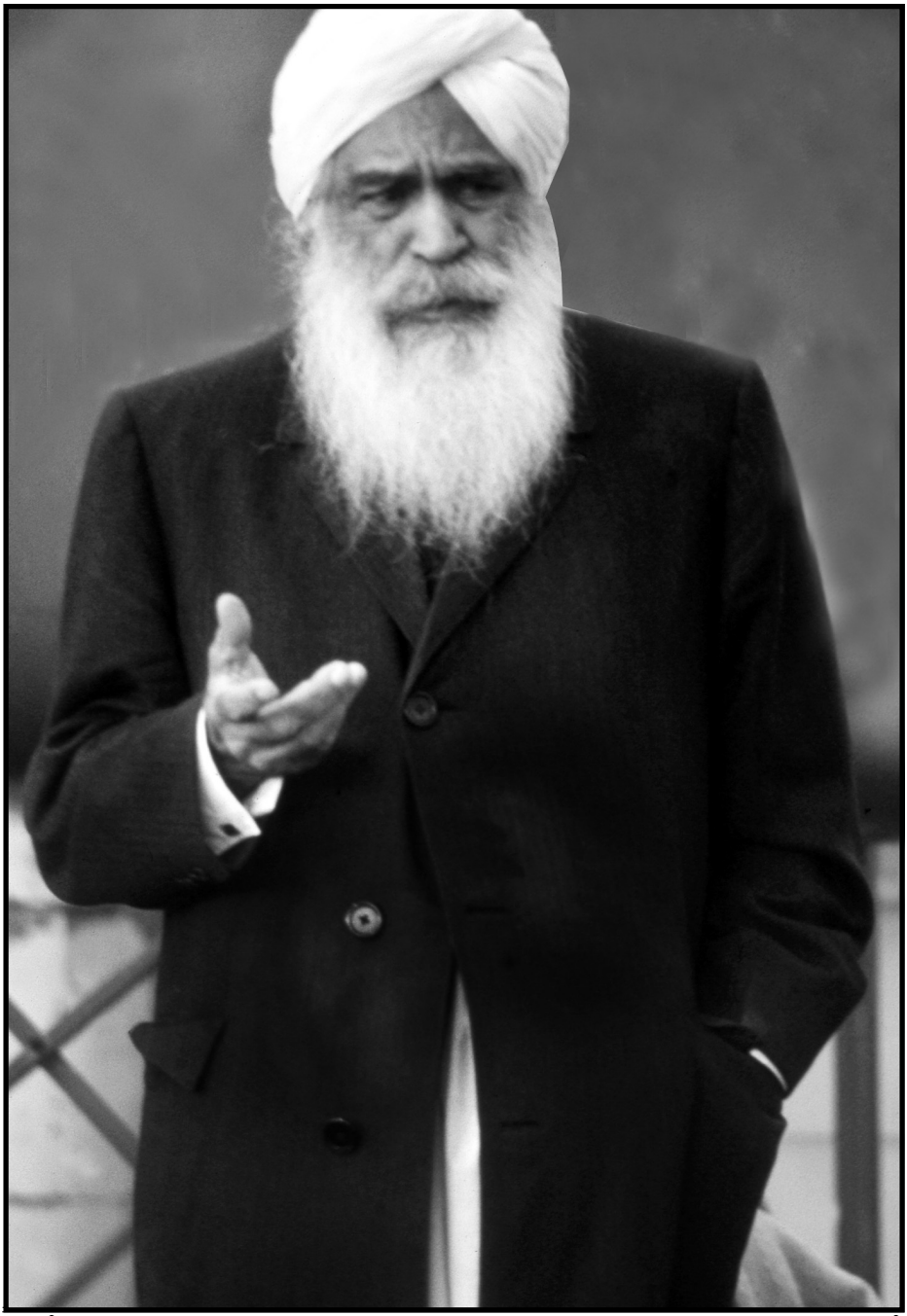

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन

दुःख– परीक्षा का समय

अगर आपके साथ कुछ भी अच्छा या बुरा होता है तो वह सीधा हमारे परमपिता परमात्मा की तरफ से आता है। अगर आपके ऊपर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आप उसे परमात्मा की महान रहमत समझें। हमने अपने पिछले कर्मों का फल देर-सवेर भुगतना ही है। सतगुरु इन दुखों को तेजी से भुगतवाकर हमें जल्दी से बोझ मुक्त करना चाहते हैं। समय से पहले कर्ज का भुगतान करने से **दुःख** की मात्रा काफी घट जाती है। हो सकता है कि पहले हमें एक टन कर्मों का भुगतान करना था लेकिन सतगुरु की दया से हमें सिर्फ एक पौंड ही चुकाना पड़ा।

जब कोई भारी कर्ज अदा कराया जाए तो दिल न छोड़ें, सब आपके भले के लिए ही है। फर्ज करें आपकी गलती न होने पर भी कोई आपसे बुरा व्यवहार करता है तो आप ऐसा समझें कि उस बुरे व्यवहार में सतगुरु का हाथ काम कर रहा है। सतगुरु आपको बताना चाहता है कि आपका अहंकार अभी मरा है या नहीं?

फर्ज करें कोई अपने रिश्तेदार को खो देता है तो यह उसका सांसारिक रिश्तेदारों से प्यार में होती हुई कमी का इम्तिहान है। जो इस दुनिया में बंधे हुए हैं परमपिता उनकी इन भारी जंजीरों को ढीली करना चाहता है। सांसारिक रिश्तेदारों से ज्यादा प्यार का मतलब है सतगुरु से कम प्यार।

हमें जो घटना दुर्भाग्यपूर्ण लगती है वास्तव में वह वैसी नहीं। ऐसी घटनाएँ हमें शुद्ध करने के लिए व हमारी प्रतिरोध करने की ताकत को बढ़ाकर आखिर में हमें बेहतर बनाने के लिए घटती है।

हमेशा परमपिता परमात्मा की मौज में रहें। परमपिता परमात्मा जो करता है हमारे अच्छे के लिए करता है। इस संसार में जो लोग ऊपर की ओर जाने में लगे हैं उन्हें दो ताकतवर दुश्मनों- मन और माया का लगातार सामना करना पड़ता है।

मन और माया हमारे रास्ते में बहुत सी रुकावटें पैदा करते हैं। अगर कोई अप्रिय घटना घटती है तो हमें दिल छोड़ने की जरुरत नहीं बल्कि हमें दोगुने प्यार से ऊपर उठना चाहिए। अंत में जीत हमारी ही होगी।

इच्छाओं ने आत्मा को सदा ही नीचा दिखाया है। जब कोई किसी वस्तु की ख्वाहिश करता है लेकिन इच्छानुसार उस वस्तु को पाने में असफल रहता है तो वह **दुःख** महसूस करता है इसलिए अभी से ही अपनी इच्छाओं को त्याग दें और अपने आपको परमपिता परमात्मा की मौज में समर्पित करने की आदत बना लें।

कुछ भी अनहोनी नहीं होती। हम जीवन में जो भी दुख या परेशानी का सामना करते हैं यह हमारे पिछले कर्मों का नतीजा है। जितनी जल्दी काल पुरुष का कर्जा दे दिया जाए उतना ही बेहतर होगा। हम पर जो भी मुसीबत आती है वह हमारे गुरु के हुक्म के अनुसार ही होती है और हमें उसे आर्शीवाद समझकर लेना चाहिए, ऐसी बाधाएँ सतसंगी के मार्ग में आनी निश्चित हैं। हमें काल पुरुष के ऐसे कृत्यों से दिल नहीं छोड़ देना चाहिए बल्कि ऐसे समय में हमें दोगुने उत्साह के साथ भजन करना चाहिए।

सतगुरु हमेशा आपके साथ है आपको देख रहा है और आपके हर काम में आपकी मदद कर रहा है। नियमित अभ्यास करते हुए गुरु चरणों के प्रति अपने प्यार व श्रद्धा को बढ़ाए। सतगुरु हमारे सांसारिक मामलों को देख लेगा।

सतगुरु का मिशन हमदर्दी व दया के खजाने को बाँटना है। कई दफा दुख भुगतने की अवधि को कम करने के लिए शारीरिक व मानसिक परेशानियों की तीव्रता बढ़ा दी जाती है। **दु:ख,** परेशानियाँ और शरीर की बीमारियाँ हमारे भोगों से उपजती हैं। शारीरिक परेशानियाँ हमें शरीर पर ही भुगतनी पड़ेगी।

सतगुरु शब्द स्वरूप है उसमें परमात्मा बसता है। सतगुरु दूर हो चाहे नजदीक हो वह अपने सभी शिष्यों को जानता है। वह अपने सेवकों के कर्मों का बोझ अपने कंधों पर भुगतने के लिए तैयार रहता है। कोई भी शिष्य यह रास्ता नहीं अपनाना चाहेगा कि उसका पवित्र गुरु उसकी गलतियों के लिए दुखी हो जबकि सतगुरु की तरफ से मदद अवश्य आती है।

हर व्यक्ति की ख्वाहिशें ज्यादातर उसके पिछले कर्मों का नतीजा है। कमजोर व सरसरी ख्वाहिशें ख्यालों में उठती हैं और मानसिक संतुष्टि के बाद स्थिर हो जाती हैं। दूसरी ऐसी ख्वाहिशें होती हैं जो ज्यादा दृढ होती हैं कुछ को तो स्थूल मंडल पर भी स्थिर करना पड़ता है। जो होता है अच्छाई के लिए होता है। हम अपने पिछले कर्मों से अनजान हैं लेकिन सतगुरु सब जानता है।

सतगुरु ने हमें अभ्यास करने के लिए कहा है। हम अपना फर्ज पूरा करें कोई आशा न रखें बाकी सतगुरु पर छोड़ दें। जो हुआ है, जो हो रहा है और जो होगा वह सब उसकी मौज में है। हम अपने आपको जिस भी हालात में पाते हैं हमें हर हालत में संतुष्ट रहना चाहिए। अगर वह हमें तकलीफ भेजता है तो हमें उसे खुशी से स्वीकार करना चाहिए अगर वह हमें खुश रखता है तो उसकी दात समझकर स्वीकार करें और खुश रहें।

शेक्सपियर ने कहा है, ''**दुःख** दवाई है और भोग रोग हैं। भोगों में मन हावी रहता है और हमें राह से अलग ले जाता है।'' आप ज्ञान के प्यासे हैं, ज्ञान धुन में है। तसल्ली रखें कि आपके पैदा होने से पहले ही आपके गुजर-बसर का इंतजाम कर दिया गया था। सुख-दुख और जीवन के आम हालात पहले ही निश्चित कर दिए गए थे। यहाँ अपने-आप कुछ नहीं होता।

जीवन के **दुःख** और सुख हमारे अपने ही कर्मों का परिणाम है। जो भी पैदा हुआ है चाहे वह किसी भी रूप में कर्म करता है हर कर्म का प्रतिकर्म होगा। हर कर्म हमारे मन पर स्थिर रूप से लिखा हुआ है। हमारी याददाश्त कमजोर है पूरा लेखा भुला दिया गया है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि कोई हिसाब नहीं है।

जीवन की खास घटनाएँ हमारे पिछले कर्मों का नतीजा हैं। ये कर्म हमारे ऊपर कर्ज हैं। एक कर्जदार की तरह जब हमारा कर्ज चुका दिया जाता है तो हमें खुश होना चाहिए क्योंकि कर्ज तो चुकाना ही पड़ेगा। जैसे आज कुछ लोग खुशी से कर्ज ले रहे हैं इसी तरह हमने भी कभी कर्ज लिया था, अब उस कर्ज का भुगतान करते हुए **दुःख** महसूस कर रहे हैं लेकिन जब कर्ज लिया था तब हम सावधान नहीं थे। अब केवल एक ही रास्ता है जो हो रहा है हम अपने आपको उसके अनुकूल बनाएँ क्योंकि होना तो है ही और हमें भुगतना भी है क्यों न बिना विरोध भुगतें?

दुःख के समय खुश रहना मुश्किल है अभी जो दृष्टिकोंण बताया गया है अगर आप उस दृष्टिकोंण से देखेंगे तो बहुत तब्दीली पाएंगे। गुरु नानकदेव जी ने कहा है, ''दुख दवाई है और भोग बीमारी है। भोग में मन फैल जाता है और **दुःख** में मन सिमट जाता है। आप परमात्मा की मौज में रहें और उसमें एक हो जाएं।''

यहाँ सन्तों का और दुनियादारों का मतभेद है। दुनिया भुगतान करती है तो रोती या हँसती है। सन्त भुगतान करते हुए न रोते हैं न हँसते हैं बल्कि वे जीवन के सुख-दुख में बेअसर रहते हैं। सवाल पैदा होता है कि इस रवैये में सन्तों को किसका सहारा है? इसका जवाब यह है कि सन्तों का भी हमारी तरह शरीर है और वे भी हमारी तरह बाहरी हालातों में रहते हैं लेकिन हम जिस तरह शरीर से बंधे हुए हैं वे वैसे बंधे हुए नहीं हैं। सन्त अपनी मर्जी से शरीर से सुरत का सिमटाव कर सकते हैं न सिर्फ स्थूल शरीर से बल्कि सूक्ष्म और कारण शरीरों से भी सिमटाव कर सकते हैं।

जब सुरत को समेटा जाता है तब सिमटाव के अनुपात में सुख और **दु:ख** का प्रभाव महसूस नहीं होता क्योंकि जिस मन ने यह महसूस करना था उस समय मन वहाँ मौजूद नहीं था। सन्त सुरत को समेटकर शब्द-धुन में रहते हैं, धुन उनका जीवन है, सन्त हमें भी यही सिखाते हैं। जो सन्तों को मानता है वे उसे भी सन्त बना देते हैं। सब्र, दृढता और श्रद्धा से ऊपर उठने की कोशिश करें। नाम जपकर आँखों के बीच आएं फिर धुन को पकड़कर नाम तक पहुँचें।

दिल ना हारें बल्कि सतगुरु पर भरोसा करें।
अपनी इच्छा उसकी मौज के हवाले कर दें।

जीवन का खेल कभी-कभी आसानी से चलता है। जब सब कुछ अच्छा चलता हुआ लगता है तो परेशान करने के लिए काल दखल देता है। अगर विश्वास मजबूत है और कोई जीवन की घटनाओं के प्रवाह के साथ चाल बनाए रखता है तो उसका समय अच्छा व्यतीत हो जाता है। हवा आई और चली गई। जीवन में **दु:ख**-सुख आते हैं और चले जाते हैं, मन तजुर्बों से सीखता है। जब बहुत ही अनुकूल कर्मों का वक्त आता है तब मन अंदर जाने की इच्छा

महसूस करता है और तभी गुरु और शब्द धुन के लिए प्यार उमड़ता है, उस वक्त सेवक भक्ति में समय व्यतीत करता है। दूसरी ओर जब परेशान करने वाले कर्म दखलंदाजी करते हैं तब मन खुष्की व उदासीनता महसूस करता है और सतसंग से दूर भाग जाता है फिर से दुनिया की दलदल में डूब जाता है। असंख्य जन्मों से जमी हुई कर्मों की गंदगी की परतों को हटाने में समय लगता है।

जीवन **दुःख** और सुख का मेल है अगर सुख के दिन चले गए तो दुख के दिन भी चले जाएँगे। कर्मों का चक्र चलता रहता है। जो तीर कमान से निकल गया है उसे अपना निशाना मिलना ही है। आदमी को अपनी तरफ से कर्म भुगतने की पूरी कोशिश करनी चाहिए क्योंकि कर्म अपरिवर्तनीय हैं।

रुहानियत के दो श्रद्धालु इस मार्ग में पहुँची हुई एक महिला के पास अपना आदर-सत्कार पेश करने के लिए गए। वहाँ अच्छे और बुरे दिनों के बारे में चर्चा होने लगी। महिला ने उनसे पूछा, ''बदले हुए हालात में इंसान का हाल कैसा होना चाहिए?'' एक ने जवाब दिया कि अच्छा और बुरा वक्त धैर्य से काट लेना चाहिए। महिला ने जवाब दिया, ''इस रवैए में अहंकार है।'' दूसरे ने कहा कि इंसान को अच्छे व बुरे दिनों को खुशी से स्वीकार करना चाहिए। महिला को उसमें भी अहंकार की बू आई। उन्होंने उस महिला को सही व्यवहार बताने के लिए कहा। महिला ने जवाब दिया, ''आत्मा की इतनी तरक्की होनी चाहिए कि उसे अच्छे और बुरे दिनों में कोई फर्क ही महसूस न हो। विपत्ति और बीमारी में हमें अपने आपको परखने का मौका मिलता है।''

आपको इस संसार में शायद ही कोई आत्मा खुश मिले। मानसिक व शारीरिक बीमारियों और परेशानियों के बोझ तले

दबी हुई हर आत्मा जुल्म का शिकार महसूस करती है। जब कठिन समय आता है तब भक्त को सब्र के साथ उसका सामना करना चाहिए। **दु:ख** को बर्दाश्त करने के लिए धुन से ताकत लेनी चाहिए।

यह याद रखना चाहिए कि अच्छे दिन बुरे दिनों के लिए जगह बनाने के लिए चले गए हैं तो वक्त आने पर बुरे दिन भी अच्छे दिनों में बदल जाएँगे। जो नाव लंगर से बंधी होती है वह बाढ़ के पानी को उतरते हुए देखती है लेकिन जो नाव अपने लंगर से अलग हो गई है वह नाव बाढ़ से बच नहीं पाएगी। धुन हमारा आधार है जो आत्मा धुन से जुड़ी है वह सुरक्षित है।

जीवन की अवधि न तो बढ़ाई जा सकती है और न ही घटाई जा सकती है। किस्मत बदली नहीं जा सकती। अच्छी सेहत व बीमारी हमारे पिछले कर्मों से जुड़ी हुई है, वह आती और जाती है। दवाई बीमारी को ठीक नहीं करती। कर्म इसकी जड़ हैं जब कर्मों का भुगतान हो जाता है बीमारी का समय पूरा हो जाता है दवाई असर कर जाती है। जब तक बीमारी का समय पूरा नहीं हो जाता दवाई असर नहीं करती लेकिन डॉक्टर की सलाह के अनुसार बीमारी में दवाई लेना ठीक है। दवाई मरीज को सांत्वना दिए रखती है। डॉक्टर की फीस व दवाखाने के बिल के जरिए पुराना कर्ज उतारने का मौका मिलता है।

जब आत्मा की अंदर पहुँच हो और वह सतगुरु के सम्पर्क में हो तब वह अंदर का सहारा प्राप्त करती है उसे बीमारी के आने का, बीमारी कितना समय रहेगी और कब जाएगी इसका प्रत्यक्ष सबूत मिलता है। ऐसे हालात में सन्त दवाई के इस्तेमाल की भी सलाह देते हैं। हो सकता है कि मरीज को अंदर से सबूत व सहारा मिल रहा हो लेकिन उसके रिश्तेदार और उसका ध्यान रखने वाले

उस जैसी सोच न रखते हों। वे उसे निरंतर दवाई के लिए जोर देते रहेंगे तो क्यों न दवाई की थोड़ी खुराक ले लें और सब कुछ आराम से चलने दें, कर्मों का कर्ज चुकाना पड़ेगा।

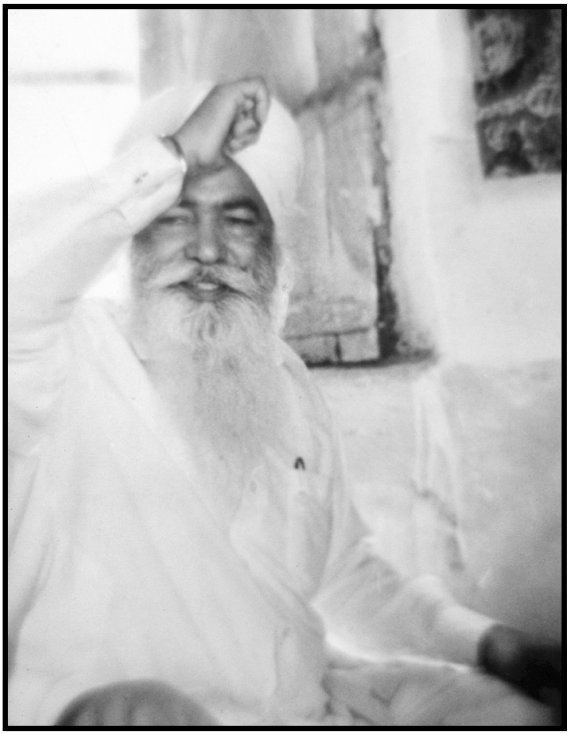

जैसे-जैसे हम धुन के पीछे जाएँगे हमारी कर्ज उतारने की ताकत बढ़ती जाएगी। जब हमारा ध्यान धुन में है, हमारी सुरत शरीर और मन से ऊपर उठी हुई है तब शरीर और मन को दुख महसूस नहीं होता क्योंकि आत्मा जीवन देने वाले सिद्धांत की वजह से इस लायक बन गई है कि वह उनके दायरे से अपने आपको अलग कर सकती है, समेट सकती है।

अगर भक्त अपना काम ईमानदारी से करता है तो उसे सतगुरु की दया मिलती है। जैसे कोई दयालु व्यक्ति किसी भारी बोझ उठाए हुए व्यक्ति से मिलता है तो वह उसका बोझ बाँटने के लिए अपना हाथ बढ़ाता है। सतगुरु इसी तरह करता है जैसे माँ अपने बच्चे की संभाल करती है उसी तरह सतगुरु श्रद्धालु भक्त की संभाल करता है। धुन का अभ्यास कर्मों को टालता नहीं बल्कि उसे नष्ट कर देता है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले

भक्ति और प्यार

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया भक्ति करने का मौका भी दिया है। मैं सदा ही आपको एक छोटा सा फिकरा याद करवाया करता हूँ कि परमात्मा की भक्ति उत्तम रत्न है अगर संसार से साथ ले जाने वाला इकट्ठा करने वाला कोई तोशा है तो वह भक्ति का पदार्थ, भक्ति का धन ही है।

परमात्मा के दरबार में भक्ति ही सच्चे सुख और सच्ची इज्जत की दाता है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसे ले जाकर हम परमात्मा को खुश कर सकें या जो परमात्मा के पास न हो। परमात्मा जिस चीज़ से खुश होता है वह **भक्ति और प्यार** है।

हीरे, रत्न मोल देकर खरीदे जा सकते हैं लेकिन भक्ति का अमोलक पदार्थ मोल देकर खरीदा नहीं जा सकता। हम इसे साधु-सन्तों से नम्रता के जरिए ही प्राप्त कर सकते हैं।

पांच विरोधी ताकतें हमारे शरीर के अंदर काम करती हैं जिन्हें काम, क्रोध, लोभ, मोह ओर अंहकार कहा गया है। किसी महात्मा ने इन्हें चोर तो किसी ने डकैत कहा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को गिरा दिया, बंदर की तरह नचाया। जब हम भक्ति प्राप्त करके भक्ति का पदार्थ इकट्ठा कर लेते हैं तो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार शान्त हो जाते हैं; ये भी हमारे मित्र बन जाते हैं।

सन्त-महात्मा संसार में परमात्मा के शरीक बनकर नहीं आते और न परमात्मा के साथ बराबरी करने के लिए आते हैं न

ही अपने आपको बड़ा साबित करने के लिए आते हैं। जिस तरह रिद्धियां-सिद्धियां दिखाने वाले लोग कहते हैं कि आओ! हम आपको लड़के देंगे, आपकी बीमारियां दूर करेंगे या आपको ऐसा मंत्र देंगे जिससे आपका रोजगार अच्छा चलने लगेगा, व्यापार अच्छा चलने लगेगा लेकिन सन्त ऐसे करिश्में नहीं दिखाते। सच तो यह है कि सन्त परमात्मा के प्यारे बच्चे बनकर रहते हैं। हमें पता है कि प्यारा बच्चा अपने पिता को खुश करके जो चाहे करवा सकता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि सन्त-महात्मा अपने प्यारे पिता से क्या करवाते हैं? सन्त-महात्मा दुनिया में आकर करामाते नहीं दिखाते। उनकी एक ही करामात है कि हे परमात्मा! मैंने जिन जीवों को तेरे नाम के बेड़े में चढ़ा दिया है अब तू इनसे कमाई करवा, इन्हें अपने चरणों में जगह दे। मैं तेरे आसरे इन्हें तेरे बेड़े में चढ़ा रहा हूँ, अब तू इन्हें बख्श दे। भक्त नामदेव जी कहते हैं:

कीता लोणन सोई करावन, दर फेर न कोई पाऐन्दा।

वे परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि तू इन्हें बख्श दे। जिसे सतगुरु बख्श कर नाम दे देता है उसका दुनिया में आने-जाने का चक्कर खत्म हो जाता है। महाराज जी कहा करते थे, ''एक ही शर्त रखी जाती है कि गुरु के ऊपर कभी अभाव न आए कि यह मेरे जैसा ही इंसान है।''

प्यारेयो! हमारे परमपिता परमात्मा कृपाल हमें जो काम बता कर गए हैं वह **भक्ति और प्यार** है। सुबह का मौका है हमने हर तरफ से ख्याल हटाकर उनकी भक्ति करनी है। मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है। परमात्मा कृपाल ने आपको यह एक कीमती घंटा दिया है इसमें दुनिया के कारोबार की सोच छोड़कर सिर्फ भक्ति के साथ जुड़ें। आँखे बंद करके सिमरन करें। ***

परम सन्त अजायब सिंह
जी महाराज के
मुखारविंद से

हरि की भक्ति

हउ मैला मलु कबहु न धोवै।
हरि का नामु कोटि पाप खोवै।।

वेद व्यास के बेटे सुखदेव मुनि को माता के पेट में ही ज्ञान था, जब उसने जन्म लिया तभी से उदास होकर भक्ति करने लगा। उसके माता-पिता ने कहा कि भक्ति करने का हमारा हक है। सुखदेव मुनि ने कहा कि पिता जी इस समय मुझ पर माया का कोई असर नहीं, मुझे सौ जन्मों का ज्ञान है।

मैंने एक जन्म ऐसा भी पाया था जब मुझे उस जन्म की याद आती है तो मेरे रौंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं गधे की योनि में एक धोबी के पास था, धोबी मेरे ऊपर गीले कपड़े डालकर खुद भी मेरे ऊपर बैठ जाता था। धोबी मुझे घाट पर छोड़ दिया करता था वहाँ मुझे खाने के लिए घास वगैरहा कुछ भी नहीं मिलता था।

एक समय ऐसा आया कि मेरे जिस्म पर जख्म हो गए, कुत्ते मेरे जिस्म को खाने लगे मैं बुरी तरह थककर नदी में गिर गया। धोबी को मुझ पर तरस नहीं आया उसने मुझे डंडे मारे और अपने कपड़े उठाकर चल दिया। वहाँ से निकलने वालों में से भी किसी को मुझ पर तरस नहीं आया कि यह बेचारा जानवर पानी में पड़ा दुखी हो रहा है। लोगों ने मुझसे पुल का काम लिया, मेरे ऊपर पैर रखकर आगे की ओर निकलने लगे।

जब मुझे उस जन्म की याद आती है तो मैं रोता हूँ अगर मैंने इंसानी जामें में आकर **हरि की भक्ति** नहीं की तो कहीं पहले जैसा जामा फिर मिल गया तो मेरी क्या हालत होगी? ***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

02 से 06 फरवरी 2020

28, 29 फरवरी व 01 मार्च 2020

31मार्च, 01 व 02 अप्रैल 2020